फोटो: सौजन्य नीला माधव पांडा

बाएं : मानसी साल्वी (बीच में) जिन्होंने मुख्य भूमिका अदा की है। साथ में हैं बाल कलाकार अक्सरा (बाएं) और वृंदा (दाएं)

ऊपर: मानसी साल्वी (बाएं) सास की भूमिका अदा करने वाली जयश्री अरोड़ा के साथ

आत्मजा धारावाहिक जो देता है संदेश

उद्देश्य बहुत अच्छा है और प्रस्तुति दर्शकों को बांधने वाली। फिर भी यह एक टेलीविजन धारावाहिक है, गीत-संगीत से भरपूर नाट्य प्रस्तुति के रूप में। धारावाहिक *आत्मजा* लिंग अधिकारों के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है और महिलाओं के विरुद्ध पारंपरिक पूर्वाग्रहों को चुनौती देता है। इसे रोचक कथानक के इर्दगिर्द बुना गया है। वर्ष 2004 में दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क और 10 क्षेत्रीय चैनलों पर प्रसारित इसका पहला खंड भ्रूण के लिंग के आधार पर गर्भपात पर केंद्रित था। 13 कड़ियों वाला दूसरा खंड विषय को आगे ले जाएगा। धारावाहिक के निर्देशक नीला माधव पांडा स्पष्ट करते हैं, ''अब नए मुद्दे सामने आएंगे। इस बार हम कन्या भ्रूणहत्या के कारणों की पड़ताल करेंगे। हम देखेंगे कि बेटियों को जन्म देने की अनिच्छा से दहेज, बलात्कार, घरेलू हिंसा और महिलाओं के साथ भेदभाव के मसले जुड़े हैं।

इस धारावाहिक को अमेरिकी संगठन यूएसएड ने गैरलाभकारी संगठन आइएफईएस के जरिये प्रायोजित किया है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय इसके प्रसारण में सहायता कर रहा है। आत्मजा को 45 देशों में डी डी इंटरनेशनल पर भी दिखाया जाएगा। केबल टीवी नेटवर्क सिटी चैनल भी इसे प्रदर्शित करेगा।

आत्मजा मई 2005 में न्यूयॉर्क में आयोजित इंटरनेशनल इंडिपेंडेंट फिल्म एंड वीडियो उत्सव में प्रदर्शित इसी नाम की लघु फिल्म पर आधारित है। *—दीपांजली काकाती*

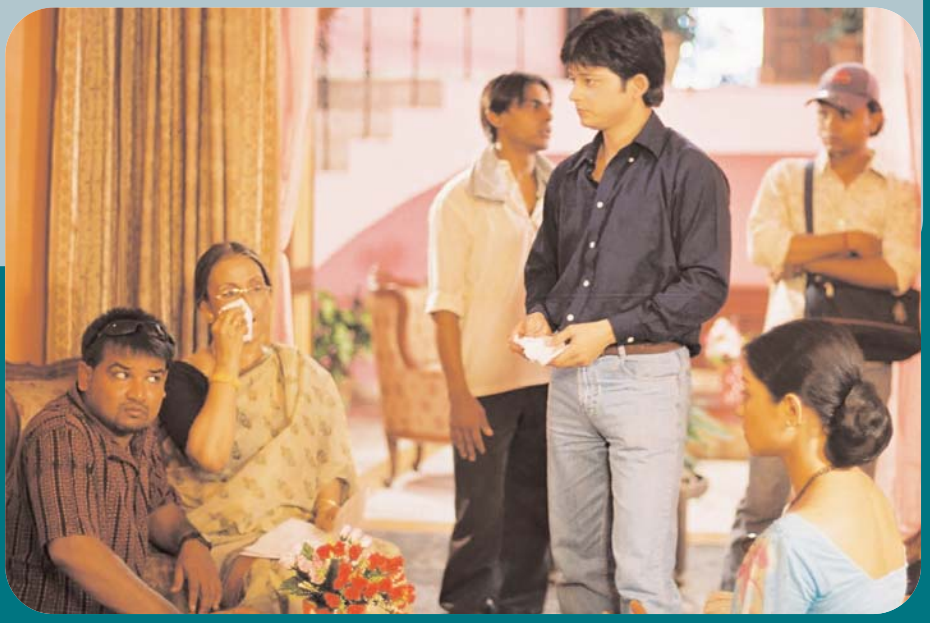

निर्देशक नीला माधव पांडा (बाएं) आत्मजा के सेट पर कलाकारों के साथ।